GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766

UGC Approved Care Listed Journal

ISSN 2348-2397

Special Issue

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 7 • Issue 25 • January to March 2020

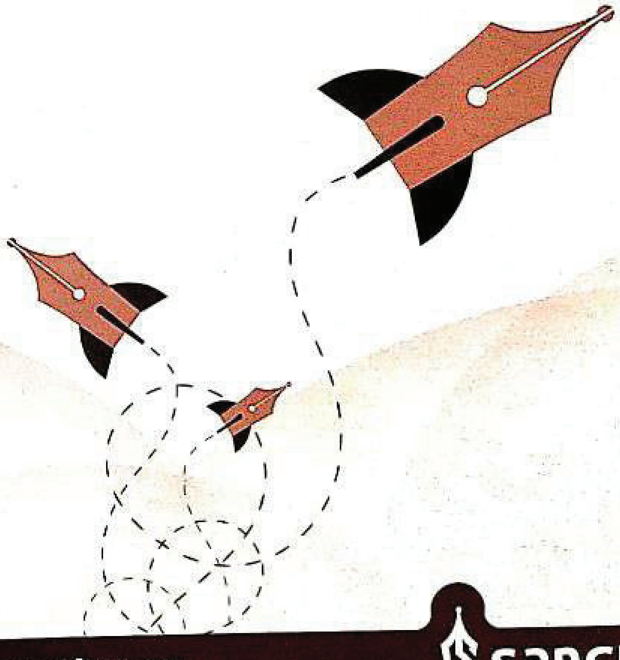

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

CS Scanned with CamScanner

PUBLISHER
Sanchar Educational & Research Foundation, Lucknow (U.P.) INDIA

PRINTER
Neelam Printers, Press, 41/381, Narhi,
Lucknow, U.P. - 226001 (U.P.)

SUBSCRIPTION / MEMBERSHIP FEE

Single Copy (Special Order) **Rs. 300/-**
Individual / Institutional

FOR INDIANS		FOR FOREIGNERS	
One Year	Rs. 1000.00- (with Postal Charges)	Single Copy	US$60.00-
Five Years	Rs. 5,000.00- (with Postal Charges)	One year	US$150.00-
Life Time Membership	Rs. 10,000.00- (with Postal Charges)		

SPECIAL

All the Cheques/Bank Drafts should be sent in the name of the **SHODH SARITA**, payable at Lucknow. All correspondence in this regard should be sent by **Speed Post** to the **Managing Editor, SHODH SARITA**

CHIEF EDITORIAL OFFICE
Dr. Vinay Kumar Sharma
M.A., Ph.d., D.Litt. - Gold Medalist
Awarded by the President of India

Editor in Chief - SHODH SARITA
448 /119/76, KALYANPURI THAKURGANJ, CHOWK, LUCKNOW -226003 U.P.,
Cell.: 09415578129, 09161456922
E-mail : serfoundation123@gmail.com

Publisher, Printer & Editor :-
Dr. Vinay Kumar Sharma Published at 448 /119/76, Kalyanpuri Thakurganj, Chowk, Lucknow-226003 U.P. and printed by Neelam Printers, Press, 41/381, Narhi, Lucknow, U.P. - 226001 (U.P.)

- The Views expressed in the articles printed in this Journal are the personal views of the Authors. It is not essential for the Shodh Sarita Patrika or its Editorial Board to be in agreement with the views of Authors.
- Any material published in this Journal cannot be reprinted or reproduced without the written permission of the editor of the Journal.
- Printing, Editing, selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
- All disputes will be subject to Lucknow jurisdiction only.

Scanned with CamScanner

SPECIAL ISSUE

Govt. of India- RNI No. : UPBIL/2014/56766

APPROVED UGC CARE

ISSN No. 2348-2397

JOURNAL OF
ARTS, HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

शोध सरिता

• Vol. 7 • Issue 25 • January - March 2020

संपादक मण्डल

डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. योगेन्द्र प्रताप सिंह
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ. अर्जुन चव्हाण
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

डॉ. कुमुद शर्मा
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. सुधीर प्रताप सिंह
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. अब्दुल अलीम
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

डॉ. गिरीश पंत
जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. जय शंकर बाबू
पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय, पाण्डिचेरी

डॉ. आशीष श्रीवास्तव
विश्व भारती विश्वविद्यालय, शांति निकेतन पश्चिम बंगाल

डॉ. अरूण होता
पश्चिमवंग विश्वविद्यालय, बारासात, कोलकाता

डॉ. भारत नामदेव भोसले
प्रधानाचार्य, प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय देऊर, महाराष्ट्र

डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे
अध्यक्ष हिंदी विभाग, प्रा. संभाजीराव कदम महाविद्यालय देऊर, महाराष्ट्र

प्रधान संपादक

डॉ. विनय कुमार शर्मा
अध्यक्ष
संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ

संचार एजुकेशनल एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन, लखनऊ (उ०प्र०), भारत द्वारा प्रकाशित

अनुक्रमणिका

1.	समकालीन हिंदी कविता में जनचेतना के स्वर	प्रा0 बहिरम देवेंद्र मगनभाई	1
2.	'धूमिल' लिखित 'बीस साल बाद' कविता में जनचेतना	डॉ0 सरोज पाटील	5
3.	डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' के उपन्यास में जन चेतना	डॉ0 रामाधार प्रजापति	8
4.	"कुणबे की औरत" कहानी मे जनचेतना	दिपाली विकास जाधव	11
5.	'संसद से सड़क तक' में सामाजिक–राजनीतिक चेतना	डॉ0 अनंत केदारे	13
6.	समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित भूमंडलीय चेतना	डॉ0 अशोक मरळे	17
7.	निम्नवर्गीय समाज में जनचेतना का प्रतीक ''नीला आकाश''	डॉ0 दिलीप कुमार कसबे	20
8.	भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में जनचेतना	डॉ. सौ. सविता लालासो नाईक निंबाळकर	24
9.	हिंदी दलित कविता में जनचेतना के विविध आयाम	डॉ0 शाहनाज महेमुदशा सय्यद	27
10.	मैत्रेयी पुष्पा के 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में चित्रित : आदिवासी विमर्श	प्रा0 डॉ0 राजेंद्र कैलास वडजे	31
11.	समकालीन हिन्दी काव्य में जनचेतना (धूमिल, लीलाधर जंगूडी और चंद्रकांत देवताले की कविताओं के संदर्भ में)	डॉ0 अनिल काळे	34
12.	'बकरी' नाटक में जनचेतना की सशक्त अभिव्यक्ति	प्रा0 डॉ0 नितीन धवडे	38
13.	धूमिल के काव्य में धार्मिक जनचेतना	डॉ0 नाजिम शेख	41
14.	समकालीन काव्य में सामाजिक चित्रण	डॉ0 सुकन्या मेरी जे.	44
15.	दुष्यन्त कुमार की गजलों में जनचेतना	डॉ0 प्रवीणकुमार न. चौगुले	48
16.	दुष्यन्त कुमार की गजलों में व्यक्त जनचेतना	नायकू मारूती दत्तात्रय	52
17.	'बारोमास' में शिक्षित किसान पुत्र एकनाथ की त्रासदी	डॉ0 एकनाथ श्रीपती पाटील	56
18.	हिंदी काव्य में नारी चेतना	प्रा. डॉ. बालाजी बळीराम गरड	59
19.	"मधु कांकरिया" के कहानियों में जनचेतना के विविध आयाम	प्रा. छगनराव मधुकर जठार	62
20.	'दोहरा अभिशाप' में चित्रित नारी चेतना : विविध आयाम	डॉ. नवनाथ गाड़ेकर	66
21.	'समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में जनचेतना के परिप्रेश्य में नारी विषमता का चित्रण'	प्रा. मारूफ मुजावर	69
22.	जनचेतना के परिप्रेक्ष में समकालीन हिंदी कविता	प्रा. रगडे परसराम रामजी	72
23.	समकालीन उपन्यासों में स्त्री केंद्रीत मिथकीय चेतना (मनु शर्मा कृत 'गांधारी की आत्मकथा' उपन्यास के संदर्भ में)	सचिन मदन जाधव	76
24.	'ऐलान गली जिन्दा है' उपन्यास की जनचेतना	डॉ. जाधव सुब्राव नामदेव संभाजी शामराव गेजगे	80
25.	आदिवासी लेखकों द्वारा लिखित उपन्यासों में आदिवासी समाज का जीवनसंघर्ष	डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात	84
26.	शशि सहगल के काव्य में चित्रित जनचेतना	प्रा. सुचिता संतोष भोसले	87
27.	अस्तित्व और अस्मिता के लिए एक स्त्री का संघर्ष – आत्मकथा शिकंजे का दर्द– सुशीला टाकभौरे	डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे	89
28.	'कितने प्रश्न करूँ' खंडकाव्य की जनचेतना	प्रा. डॉ. शिवाजी उत्तम चवरे	92
29.	''मैं भी औरत हूँ'' उपन्यास में जनचेतना	प्रा. तेजश्री किसन पाटील	96
30.	मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास में–चित्रित दलित संघर्ष चेतना (महानायक बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर के विशेष संदर्भ में)	प्रा अशोक गोविंदराव उघडे	98
31.	हिंदी नाटकों में प्रतिबिंबित जनचेतना	प्रा. डॉ. भानुदास आगेडकर	101
32.	हिंदी कविता में अम्बेडकरवादी सामाजिक चेतना (ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'बस्स! बहुत हो चुका' कविता संग्रह के विशेष संदर्भ में)	डॉ.गोरख निळोबा बनसोडे	105

Scanned with CamScanner

33.	राष्ट्रीय चेतना की सुलगती अभिव्यक्ति दक्खिनी काव्य	डॉ. हाशमबेग मिर्झा जावेद खलील पटेल	109
34.	नागार्जुन के काव्य में जनवादी चेतना	प्रा. डॉ. छाया शंकर माळी	113
35.	समकालीन प्रमुख हिंदी गजलकारों की रचनाओं में जनचेतना के विभिन्न आयाम	प्रा. डॉ. संदीप जोतीराम किर्दत	115
36.	'धूमिल' के काव्य में जनचेतना	प्रा. डॉ. सौ. सविता शिवलिंग मेनकुदळे	118
37.	हिंदी तथा मराठी कविता का समकालीन परिदृश्य	डॉ0 भाऊसाहेब नवनाथ नवले	121
38.	चंद्रसेन 'विराट' की ग़ज़लों में व्यक्त आम आदमी	डॉ. शौकत अली सय्यद	125
39.	मायानंद मिश्र के कथा साहित्य में आंचलिकता एवं सामाजिक जनचेतना का स्वर	डॉ. रंजीत कुमार	128
40.	डॉ. महीप सिंह के उपन्यास में पारिवारिक, राजनीतिक एवं सामाजिक चेतना	डॉ. सुनीता साह	133
41.	सुशिला टाकभौरे की 'सिलिया' कहानी में दलित चेतना	सुनंदा सोपानराव मोहिते	138
42.	समाकलीन हिंदी कविता : जनवादी संवेदना के नए स्वर	डॉ0 पंडित बन्ने	141
43.	जनवादीधारा का सशक्त कवि – नागार्जुन	डॉ. सुमा.टी.रोडन्नवर	144
44.	शम्बूक : आधुनिक विचारों का वाहक	प्रा. सिद्धाराम पाटील	146
45.	इक्कीसवी सदी की हिंदी कहानी में धार्मिक चेतना	प्रा. सुधाकर इंडी	149
46.	हिंदी कविता में दलित चेतना के स्वर	डॉ. दीपक रामा तुपे	152
47.	चंद्रकांत देवताले की कविताओं में चित्रित मजदूरों की पीडा	डॉ. अशोक शेलार	154
48.	वेदनाओं का सफर : अल्मा कबूतरी	डॉ प्रकाश कोपार्डे	158
49.	मार्कण्डेय की कहानियों में ग्रामीण चेतना	प्रा० मनोज कांबले	161
50.	ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में दलित चेतना	प्रा० उमेश बेलंके	166
51.	'कबीरा खड़ा बाजार में' नाटक मे संघर्षशील चेतना	प्रा. डॉ. बिराजदार गंगाधर धुळप्पा	170
52.	समकालीन हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना	डॉ. अनु पाण्डेय	172
53.	समकालीन भारतीय समाज में उदय प्रकाश की कहानियाँ	प्रा. युवराज राजाराम मुळये	175
54.	समकालीन काव्य में युग चेतना	प्रा. डॉ. विद्या शशीशेखर षिंदे	179
55.	नागार्जुन के कविता में जनपक्षधरता	डॉ. गुरुदत्ता	183
56.	प्रगतिशील साहित्य में दलित विमर्श : एक मूल्यांकन	डॉ. आबासाहेब राठोड	186
57.	ज़हीर कुरेशी के ग़ज़लों में मानवबोध	डॉ. प्रिया ए.	190
58.	समकालीन हिन्दी कविता के संदर्भ में एक विवेचन	डॉ. रमेश टी. बावनथड़े	193
59.	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में जनचेतना के विविध आयाम	लक्ष्मी बाकेलाल यादव	196
60.	आधुनिक दांपत्य जीवन का यथार्थ : बिना दीवारों के घर	प्रा. एस. के आतार	201
61.	डॉ. रामदरश मिश्र के काव्य में चित्रित प्रगतिवादी चेतना	डॉ. जयलक्ष्मी एफ. पाटील	203
62.	निराला के काव्य में जनचेतना	प्रा. डॉ. रशीद तहसिलदार	206
63.	एक सड़क सत्तावन गलियाँ : नारी शोषण	डॉ. मा. ना. गायकवाड	209
64.	'बाबा नागार्जुन' की उपन्यासों में जनचेतना के विविध आयाम	प्रा. कैलास बबन माने	211
65.	समकालीन हिन्दी नाटकों में सामाजिक चेतना	प्रा. डॉ.अनिता वेताळ /अंत्रे	214
66.	बदलता भारतीय परिदृश्य : संत कबीर और उनका साहित्य	डॉ. संजय नाईनवाड	217
67.	स्त्री–चेतना का बदलता परिदृश्य : दलित उपन्यासों के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. उमा देवी	220
68.	हिंदी और मराठी दलित आत्मकथाओ में अभिव्यक्त जीवन संघर्ष का तुलनात्मक अध्ययन	पार्वती भगवानराव देशपांडे	224
69.	आदिवासी साहित्य 'जारवा औरत के बहाने ....'	डॉ सुनिता मच्छिंद्र मोटे	227

Scanned with CamScanner

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 25, January-March, 2020
Page Nos. 217-219

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

बदलता भारतीय परिदृश्य: संत कबीर और उनका साहित्य

डॉ. संजय नाईनवाड*

शोध सारांश

संत कबीर 15वीं सदी के महान समाज सुधारक, भक्त कवि और दार्शनिक थे। कबीर का व्यक्तित्व क्रांतिकारी रहा है। कबीर अपनी वाणियों, प्रवचन, चिंतन एवं आचरण से भारतीय समाज में परिव्याप्त जाति–व्यवस्था, वर्ण–व्यवस्था, सामाजिक एवं आर्थिक विषमता को नष्ट कर उक्त सभी क्षेत्रों में समता की स्थापना के लिए बगावत कर आजीवन लड़ते रहे। कबीर का समूचा जीवन सांप्रदायिक सौहार्द, शांति, बंधुत्व, दया और करुणा से ओतप्रोत रहा है। कबीर साहित्य का बुनियादी सूत्र रहा है – 'वसुधैव कुटुंबकम' व 'जीयो और जीने दो'। वर्तमान बदलते भारतीय परिदृश्य में कबीर साहित्य भारतीय समाज को रचनात्मक मोड देने के लिए अहं भूमिका अदा करने में सक्षम है, अतः कबीर साहित्य पर अमल की नितांत आवश्यकता है। भारतीय समाज में आज की अधिकांश समस्याओं का समाधान कबीर साहित्य में निसंदेह है।

बीज शब्द भक्तिकाल, निर्गुण निराकार, मानव धर्म, आत्मा–परमात्मा, संप्रदायवाद, वर्ण–व्यवस्था, पाखंड, एकेश्वरवाद, सामाजिक समता, आर्थिक विषमता।

विषय विवेचन

कबीर भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक संत कवि थे। कबीर का जन्म उत्तर प्रदेश के काशी (वाराणसी) में सन 1398 में हुआ था। इस मत की पुष्टि स्वयं कबीर का यह कथन भी करता है, "काशी में परगट भये रामानंद चेताये"। कबीर की पहचान महान विचारक, दार्शनिक, मार्गदर्शक, समाज सुधारक और क्रांतिकारी के रूप में महत्वपूर्ण है। कबीर के ज्ञानरूपी साहित्य के प्रकाश ने अज्ञानता के अंधकार में भटक रहे मानव को सच्चे जीवन और मानवता का पथ–दर्शन कराया। कबीर का अविर्भाव ऐसे समय हुआ था जब दो विभिन्न धर्मों के राजनीतिक परिस्थितियों के संघर्ष में समाज अपने को स्थिर नहीं कर पा रहा था। ऐसी सामाजिक एवं राजनीतिक उथल–पुथल की पृष्ठभूमि में कबीर का साहित्य समन्वय, एकता और सामाजिक सौहार्द की पैरवी करनेवाला साबित हुआ। कबीर जैसे संत कवियों ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में देशभर में तीर्थाटन किया। जहाँ कहीं पाखंड, अन्याय–अत्याचार, शोषण, संप्रदायवाद देखा, उस पर कबीर ने जमकर प्रहार किया और अपने उपदेश तथा बाणियों से समाज को मानवता का पाठ पढ़ाया।

कबीर के विचारों के मूल में है 'मानव'। 'मानव धर्म' के बारे में कबीर का विचार था– 'जब तक समाज में ब्राह्मण, तुर्क की विभेद भावना विद्यमान है, मंदिर या मस्जिद के विधि अनुष्ठान विद्यमान है, तब तक हम इंसान को इंसान के रूप में नहीं देख सकते।' कबीर मानवीय सद्भाव को महत्व देनेवाले व्यक्ति थे। कबीर का मानव को समदृष्टि से देखना सुधारवादी विचार था। वे समाज के कुरूप को दूर फेंकना चाहते थे। पुष्पपाल सिंह के अनुसार, "जनता के दुख–दर्द और उनकी वेदना से फूटकर ही उनके काव्य की सरस्वती बही है। सत्य का सहज ढंग से वर्णन करने में कबीर अपने प्रतिद्वन्दी को नहीं जानते थे।"1 मानवधर्म का मार्ग प्रशस्त करने के लिए सत्संग से उन्हें जो कुछ अच्छा प्राप्त हुआ, उसे उन्होंने स्वीकार किया। कबीर का दर्शन और भाव उनके पवित्र आचरण और चरित्र का प्रतिफलन कहा जा सकता है। मानवधर्म को समक्ष रखते हुए भक्ति को मौखिक रूप प्रदान करने वाले कवि के रूप में कबीर को जाना जाता है। मध्ययुग में कबीर ही ऐसे एकमात्र संत थे जिन्हें दोनों धर्मों के व्यक्ति डरते और प्यार भी करते थे।

आजादी के बाद देश में लोकतांत्रिक प्रणाली को अपनाया गया। देश का संविधान बना। उसमें एक तत्व की विधि के समक्ष सब समान हैं, यह एक है। लेकिन व्यवहार में कहाँ एकता के तत्व का अवलंब किया जाता है। आज भी वर्णव्यवस्था वाली सोच लोगों के जेहन में कायम है। उसी के तहत व्यक्ति सोचता और विचार करता दिखाई दे रहा है। व्यक्ति की पहचान जाति और धर्म के आधार पर आज भी हो रही है। इससे देश में कैसे सामाजिक समानता पैदा होगी। यदि देश में सामाजिक समता निर्माण होनी आवश्यक है तो इसके लिए जरूरी है कबीर के बताए रास्ते पर चलना। कबीर ने सामाजिक समता की बात 15वीं शती में रखी थी। वह आज भी पूरी तरह से व्यवहार में नहीं आ पायी है।

*सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, एस.बी. झाड़बुके महाविद्यालय, बार्शी,

Scanned with CamScanner

अपनी पूजा पद्धति भी होती है, इस पूजा पद्धति को लेकर भी कई दफा दो धर्मों के बीच संघर्ष का माहौल निर्मित होता है। नतीजा धार्मिक दंगे भडकने की संभावना बलवती होती है। देश में कई बार ऐसी स्थितियाँ पैदा होकर धर्म के नाम पर दंगे भडक उठे थे। दंगों की आग में इंसान झुलसकर निकला है। धार्मिक दंगों में मानव मानवता को भूलाकर एक दूसरे के खून का प्यासा बन जाता है। उसके लिए धर्म सर्वोपरि हो जाता है। आज के दौर में भी हम देख भी रहे हैं कि देश में इस तरह बेमतलब की बातों में उलझकर हम स्वयं को और देशकृसमाज को पिछे ले जा रहे हैं। लेकिन कबीर ने 15वीं शती में एकेश्वरवाद की बात रखी थी। धर्म, जाति, संपद्राय, ईश्वर, पूजाकृपाठ आदि के द्वारा एक दूसरे से लडनेकृझगडने का कोई मतलब नहीं है। कबीर का कहना था कि हम सब एक ही परमात्मा की संतानें हैं। सबको उसी ने बनाया है। बनाने वाला एक ही है। कबीर ने एकेश्वरवाद का विचार रखकर दुनिया को एकजुट करने का प्रयास किया। कबीर के समय में धर्म, जाति, संप्रदाय, सगुण–निर्गुण के झमेले में पड़कर लोग आपस में लड़ रहे थे। ऐसे समय कबीर ने कहा कि परमेश्वर एक है। ''मूलतः एक परोक्ष सर्व शक्तिमान सत्त को जिसका कण–कण जड़ और चेतन सबमें व्याप्त है, कोई राम और कोई रहीम कहकर पुकारता है।''6 कबीर का मानना था कि भातृभावना सामाजिक, राजनीतिक शांति एवं उन्नति की जड़ है। जब तक समाज में इसका संचार नहीं होता तब तक मानव जीवन मंगलमय नहीं हो सकता। इसीलिए कबीर ने कहा था –

''कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी चाहे खौर
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बौर।।''7

कबीर जिस युग में जी रहे थे उस युग में सामंतवाद अपने चरम पर पहुँच गया था। साथ ही उस युग में वर्गवाद और जातिवाद भी बडे पैमान पर तांडव मचा रहा था। कबीर ने समता की स्थापना करने के लिए और समाज को नवीन आकार देने के लिए निरंत कार्य किया। वे आचरण और विचार से एकरूप थे। कबीर ऐसे किसी भी सामाजिक आचरण, व्यवहार को बुरा मानते थे जिसका जीवन में कोई लाभ न हो, जो जीवन को सुधारने में उपयोगी न हो। कबीर ईश्वर के आडंबर विहीन गुणातीत, निर्गुण, निराकार रूप के अनन्य उपासक थे। कबीर का प्रेम सीधाकृसाधा था। कबीर आत्मा की सत्यता और इस संसार की नश्वरता को अच्छी तरह से मानते थे। कबीर सांसारिक मनुष्यों को माया में फॅसे रहकर भी सुख और कुशल की कामना करने पर सव्यंग्य कहा करते थे।

''कुसलकृकुसल ही पूछते कुसल रहा न कोय।
जरा मुई न भय मुआ कुसल कहॉ ते होय।''8

कबीर के मानवतावादी विचार समग्र विश्व को एकता के सूत्र में बांधकर जाति, धर्म, संप्रदाय, अलगाववाद और आतंकवाद से रहित समाज की निर्मिति के अकांक्षी थे। कबीर जैसे संत ने मध्यकालीन भारतीय समाज जहॉं पुरोहितवाद, सामंतशाही, मिथ्याचार, रूढ़िवादीता, छद्म, जडता, पाखंड और अंधविश्वास पर टिका था, वहीं समस्त रूढ़ियों को अस्वीकार करते हुए, लोक और शास्त्र के अर्थहीन मूल्यों को नकार कर खुला विरोध किया तथा उस परंपरा को समृद्ध किया, जिसका बीजारोपण बौद्ध, सिद्ध और नाथों ने किया था। कबीर ने लिक से हटकर अपने विचार रखे थे। कबीर समाज में आमूल–चूल परिवर्तन के आकांक्षी थे।

निष्कर्ष

आज समूचा विश्व सूचना तकनीकी की क्रांति के चलते 'ग्लोबल विलेज' में परिवर्तित हो गया है किंतु गाँव–देहातों में मिलनेवाली आत्मीयता, प्रेम, भाईचारा, सहयोग आज के सूचना तकनीकी 'ग्लोबल विलेज' में नहीं है। यदि कबीर के मानवतावादी दर्शन एवं विचारधारा पर समाज अमल करें तो मानवीय मूल्यों से रहित बाजारवाद के इस दौर में विश्व बंधुत्व की भावना, मानवतावाद और वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा बेशक अवतरीत होगी। आज हमें कबीर के दिखाए रास्ते पर चलने की जरूरत है। यदि हम कबीर दिखाए रास्ते पर चलते हैं। तो अवश्य ही समाज की कई सारी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। यह हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि नव भारत के निर्माण में कबीर के विचार अत्यंत महत्वपूर्ण साबित होने वाले हैं।

संदर्भ

1. पुष्पपाल सिंह, कबीर ग्रन्थावली (सटिक), अशोक प्रकाशन, दिल्ली, पृ.135
2. डॉ. देवमणी मिश्रा, सन्त साहित्य में मानव मूल्य, पृ. 87
3. रामकिशोर शर्मा, कबीर ग्रन्थावली (सटिक) लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 214
4. वहीं, पृ. 233
5. वहीं पृ. 105
6. डॉ. पुरूषोत्तम वाजपेयी, कबीर और जायसी, चन्द्रलोक प्रकाशन, दिल्ली, पृ.30
7. गंगाशरण शास्त्री, कबीर चालीसा, कबीर वाणी प्रकाशन केन्द्र, दिल्ली, पृ.149
8. डॉ. प्रकाश मिश्र, हिंदी के प्रतिनिधि कवि, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृ.32

❑❑❑

Scanned with CamScanner